धान नर्सरी:क्यारियों के निर्माण की विधियां एवं उनका रख-रखाव

डॉ. सुष्मिता मुंडा, डॉ. टोटन अदक एवं डॉ. संजय साहा

परिचय

चावल पूरे विश्व में विविध जलवायु एवं मृदा परिस्थितियों में बोई जाने वाली एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है। रोपाई एक सामान्य एवं संभवतः धान की खेती में सबसे व्यापक रूप से अपनाई जाने वाला विधि है। सफल रोपाई फसल के लिए स्वस्थ पौधों का होना अति आवश्यक है। इसलिए अनाज की अच्छी उपज की प्राप्ति के लिए नर्सरी क्यारी प्रबंधन एक प्रमुख कारक है। स्वस्थ पौधों से बेहतर प्रारंभिक ओज की प्राप्ति में मदद मिलती है जो अंत में अधिक उत्पादकता में परिलक्षित होती है। नर्सरी क्यारी प्रबंधन में नर्सरी क्यारी काचयन, गुणवता बीजों का उपयोग, बीज उपचार, मृदा पोषकतत्वों का प्रबंधन, उचित खरपतवार नियंत्रण तथा आवश्यकतानुसार जल का सटीक प्रयोग शामिल है। नर्सरी क्यारी प्रबंधन में सही समय पर पौधों को उखाड़कर मुख्य खेत में रोपाई करने का निर्णय भी शामिल है।

नर्सरी प्रणालियां

नर्सरी एक ऐसा स्थान है जहां पौधों को उपयोगी आकार तक उगाकर प्रयोग में लाया जाता है। नर्सरी क्यारी को एक 'तैयार क्षेत्र' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जहां बीज की बुआई की जाती है। धान पौधों को रोपाई कार्य के लिए आर्द्र क्यारी, शुष्क क्यारी या डेपोग विधि से उगाया जा सकता है। यांत्रिक पद्धति से पौधों की रोपाई के लिए चटाईदार क्यारियों का प्रयोग किया जा सकता है। किसी विशेष प्रकार की नर्सरी प्रणाली के चयन के लिए जल, श्रम, भूमि तथा कृषि उपकरणों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

1. आर्द्र क्यारी विधि

आर्द्र बीज क्यारी नर्सरी विधि का प्रयोग मुख्यत उन क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है जहां नर्सरी बनाने के लिए जल की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में होती है। विघटित जैविक खाद (5 टन प्रति हेक्टर) के अआधारभूत प्रयोग से पौधों को उखाड़ने में आसानी होती है। यदि मुख्य खेत में बीज क्यारी का क्षेत्र लगभग 1/10वां भाग है तो उच्च पैदावार वाली किस्मों की खेती में लगभग 30-40 किलोग्राम बीज प्रति

हेक्टर की आवश्यकता होती है। क्यारी को 4-5 सेंटीमीटर ऊंचाई, 1-1.5 मीटर चौड़ाई एवं समुचित लंबाई आकार में तैयार करना होता है जिससे क्यारी के प्रबंधन में सुविधा होती है। बीज क्यारियों के मध्य 40 सेंटीमीटर का निकास चैनल बनाए रखना जरूरी होता है। प्रत्येक 1000 वर्गमीटर बीज क्यारी के लिए 5-10 किलोग्राम नाइट्रोजन एवं P_2O_5 तथा 5-10 किलोग्राम K_2O प्रयोग करने की आवश्यकता है। पूर्व-अंकुरित बीज की 30-40 ग्राम प्रति वर्गमीटर कतार बुआई पद्धति द्वारा बुआई की जानी चाहिए। अच्छी गुणवत्ता वाले धान बीजों को साफ पानी में कम से कम 24 घंटे की अवधि तक भीगोना चाहिए तथा लगभग 48 घंटे तक हल्की गर्म सूखी जगह में सुखाना चाहिए। अंकुरित बीजों की नर्सरी क्यारी में समान रूप से कतारर बुआई कर देनी चाहिए। बुआई करने से पहले नर्सरी से अच्छी तरह से जल निकासी कर देना चाहिए। इसके बाद, नर्सरी में 5 दिनों तक नमी की स्थिति कायम रखनी होती है। पौधों को लगाने के बाद, नर्सरी की सिंचाई होती है तथा धीरे-धीरे जल स्तर बढ़ाया जाता है। पौधों की रोपाई करने की श्रेष्ठ अवस्था 15-21 दिन बाद है यद्यपि 21-25 दिनों बाद सामान्यतः रोपाई की जाती है।

आर्द्र क्यारी नर्सरी से लाभ

1. कम बीज की आवश्यकता होती है।
2. बीज क्यारी के लिए स्थान चयन है अधिक विकल्प प्राप्त होते हैं।

3. पौधें मजबूत होते हैं और उनकी वृद्धि भी तेजी से होती है।

आर्द्र क्यारी नर्सरी के नुकसान

1. अधिक जल की आवश्यकता होती है।
2. बीज क्यारी की तैयारी एवं देखभाल तथा पौधों को उखाड़ना श्रमसाध्य है।
3. पौधें सूखे की स्थिति को सहन नहीं कर पाते हैं।
4. नर्सरियों में पौधों को लंबी अवधि तक नहीं रखा जा सकता है क्योंकि अनुकूल स्थिति में उनमें दौजियां एवं गांठें उत्पन्न हो जाती हैं।

2. शुष्क क्यारी विधि

यह नर्सरी शुष्क मृदा परिस्थितियों में तैयार की जाती है। यह स्थान छाया होना चाहिए तथा सिंचाई सुविधा से जुड़ा होना चाहिए। इसमें 5-10 सेंटीमीटर ऊंचाई तक मिट्टी को उठाकर सुविधाजनक आकार की बीज क्यारियां बनाई जाती हैं।

आधी जली धान भूसी की एक पतली परत नर्सरी क्यारी पर बिछा देने पर पौधों को उखाड़ने में आसानी होती है। इस पद्धति में शुष्क बीजो की कतारों के बीच 10 सेंटीमीटर की दूरी बनाए रखते हुए बुआई की जाती है। छिटकावा विधि से भी बुआई की जा सकती है किंतु ऐसी बुआई से बचना चाहिए क्योंकि खरपतवारों के नियंत्रण में कठिनाई होती है। नर्सरी का क्षेत्र रोपाई के क्षेत्र का 1/10वां भाग होना चाहिए। प्रारंभिक अवस्था में अच्छी पौध हेतु लगभग 40-50 किलोग्राम प्रति हेक्टर अपेक्षाकृत अधिक बीज दर से बीज प्रयोग करना चाहिए। अंकुरण होने के 15-21 दिनों के बाद पौधों को उखाड़ना चाहिए। नर्सरी में अधिक आर्द्रता न हो, इसका हमेशा ध्यान रखना चाहिए। यदि मृदा में पोषकतत्व की कमी है तो आधारभूत उर्वरकों का मिश्रण तैयार करके कतारों के बीच डाल देना चाहिए।

शुष्क क्यारी नर्सरी पद्धति से लाभ

1. कम पानी में इस प्रकार की क्यारी तैयार हो जाती है।
2. आर्द्र बीज क्यारी की तैयारी की अपेक्षा शुष्क क्यारी नर्सरी की तैयारी आसान हैं।
3. उखाड़ने में आसानी होती है, पौधों आसानी से आ जाते हैं।
4. पौधें एक दूसरी से चिपकते नहीं हैं जिससे एकल रोपाई में आसानी होती है।
5. पौधें सख्त होते हैं तथा कुछ हद तक प्रतिकूल स्थिति सहन कर सकते हैं।
6. शुष्क क्यारी नर्सरी में उगाए गए पौधों में दौजियां शीघ्र निकलती हैं तथा अधिक संख्या में होती हैं।
7. पौधे छोटे एवं मजबूत होते हैं, आर्द्र क्यारी की अपेक्षा इस प्रणाली में जड़े लंबी होती हैं जिन्हें अत्यधिक वर्षा में भी उगाया जा सकता है। आर्द्र क्यारी में यह संभव नहीं है।

शुष्क क्यारी नर्सरी पद्धति के नुकसान

1. उखाड़ने के समय जड़ें नष्ट हो सकती हैं।
2. पौधों में ब्लास्ट रोग हो सकता है एवं पौधों को नाशकजीव जैसे चूहे नष्ट कर सकते हैं।
3. रोपाई के लिए अनुकूलतम वृद्धि हेतु पौधों को अधिक समय लग सकता है।
4. रेतीले, कठोर मिट्टी या लवणीय मिट्टी के लिए उपयुक्त नहीं है।
5. आर्द्र नर्सरी क्यारी की अपेक्षा अधिक बीज दर की आवश्यकता होती है।

3. डैपोग विधि

कम अवधि वाली धान किस्मों की खेती के लिए डैपोग विधि अथवा चटाईदार विधि सबसे उपयुक्त है क्योंकि इसमें रोपाई कम करनी पड़ती है। अन्य विधियों की तुलना में, इस पद्धति में कम श्रम की आवश्यकता होती है तथा जड़ों का नुकसान कम होता है। जहां पानी की आपूर्ति पर्याप्त है, वहां बराबर सतह पर इन नर्सरियों को बनाया जा सकता है। बीज क्यारी के लिए 100 वर्गमीटर प्रति हेक्टर का क्षेत्र अथवा खेत का 1 प्रतिशत की आवश्यकता होती है तथा 35-40 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टर की जरूरत होती है। बीज क्यारी को समतल करके क्यारी के बीच वाले स्थान को किनारों की

अपेक्षा थोड़ा-सा ऊंचा करना चाहिए ताकि सतह से पानी की निकासी अच्छी तरह हो सके। सतह को पोलीथीन चादर से ढक देना चाहिए जिससे जड़ें मिट्टी की अधिक तह तक न जाएं। सीमेंट वाली फर्श का भी इस प्रयोजन के लिए उपयोग किया जा सकता है। बीज क्यारी को एक चौथाई सतह तक जली हुई धान भूसी या कंपोस्ट से ढक देना चाहिए।

पूर्व अंकुरित 2-3 बीज मोटाई की दर से समान रूप से बीज क्यारी पर छिटक कर बो देना चाहिए। अंकुरित हो रहे बीजों पर पानी छिड़कते रहें तथा हाथ या लकड़ी के पाटे के सहारे सुबह एवं अपराह्न में 3 से 4 दिनों तक क्यारी को दबाते रहें ताकि असमान वृद्धि न हो। बीजों के अंकुरण होने के 9-14 दिनों के बाद नर्सरी में रोपाई कर देना चाहिए। आर्द्र या शुष्क क्यारी बीज की अपेक्षा इसमें कम स्थान की आवश्यकता होती है तथा पौधों को उखाड़ने की लागत कम होती है। चूंकि पौधें छोटे होते हैं, रोपाई कार्य कठिन होता है। पौधे छोटे होने के कारण इस पद्धति में खेत को अच्छी तरह से समतल करना चाहिए और पानीमुक्त रखना चाहिए।

4. संशोधित चटाईदार नर्सरी

संशोधित चटाईदार नर्सरी विधि में कम जगह तथा बीज की आवश्यकता होती है। इसमें 12-15 किलोग्राम के अच्छे गुणवत्ता के बीज तथा अन्य निवेश जैसे उर्वरक एवं जल की जरूरत होती है। इस विधि में बीज क्यारी के लिए 100 वर्गमीटर प्रति हेक्टर का क्षेत्र पर्याप्त है। नर्सरी का आकार 1.2 मीटर चौड़ा होना चाहिए। इसके समतल की गई क्यारी पर एक पोलीथीन चादर रखी जाती है तथा इस पर 1.5-2 सेंटीमीटर की ऊंचाई तक कंपोस्ट की एक परत बनाकर रखी जाती है। इसके बाद अंकुरित बीजों को छिट कर बुआई की जाती है। दिन में दो बार की दर पर 5 दिनों तक सिंचाई करनी चाहिए। पौधें 9 से 14 दिनों के भीतर रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं जबकि रोपाई करने का उपयुक्त समय 10 दिन रखना चाहिए।

धान नर्सरी का रख-रखाव

धान बीज क्यारी में, बुआई करने के 4-5 दिनों के बाद खरपतवारों का आविर्भाव आरंभ होता है तथा अधिकांश खरपतवार 7-8 दिनों में बढ़ते हैं एवं इसके बाद इनकी संख्या में कमी होती है। नर्सरी में प्रमुख रूप से खरपतवार जैसे ऐसिनोक्लोआकलोना एवं साइपरसडिफरमिस उगते हैं तथा मुख्य खेत में इन प्रजातियों के खरपतवार 5-10 प्रतिशत धान फसल के साथ बढ़ते हैं जिससे 20 प्रतिशत तक फसल उपज में क्षति होती है। इनके रोकथाम के प्रमुख उपाय हैं-खरपतवारमुक्त बीज, साफ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग, खेती की उचित तैयारी एवं जल प्रबंधन, तटबंध एवं खेत के किनारों से खरपतवारों को हटाना तथा खरपतवार बीजों को फैलने से रोकने के लिए कृषि उपकरणों को साफ करना। नर्सरी में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु व्यावहारिक तरीके के रूप में कुछ पारंपरिक खेती पद्धतियों के साथ रासायनिकों का प्रयोग किया जा सकता है।

अत्यधिक गंभीर प्रकोप वाले क्षेत्रों में, धान नर्सरी क्यारी में खरपतवारों का नियंत्रण के लिए जल प्रबंधन एक अच्छी रणनीति है। बुआई करने के 7 दिनों पहले 10-20 सेंटीमीटर का जल स्तर बनाए रखने तथा बुआई करने तुरंत बाद 10 सेंटीमीटर का जल स्तर बनाए रखने से खरपतवारों का नियंत्रण असरदार होता है। बीजों के अंकुरण के समय जल निकासी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दौरान नर्सरी क्यारी में खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 3-5 सेंटीमीटर का जल स्तर बनाए रखना प्रभावी होता है। नर्सरी क्यारी में पेंडिमेथालीन 750 ग्राम प्रति हेक्टर या पाइराजोल्फ्यूरन एथिल 20 ग्राम प्रति हेक्टर या फ्लूसेटोसल्फ्यूरन 25 ग्राम प्रति हेक्टर के प्रयोग से खरपतवारों का अच्छा नियंत्रण होता है।

निष्कर्ष

नर्सरी क्यारी के उचित प्रबंधन से, स्वस्थ धान पौधों को उगाया जा सकता है जिससे धान की एक अच्छी फसल की प्राप्ति की जा सकती है। मौजूदा संसाधन जैसे जल की उपलब्धता, श्रम, भूमि तथा कृषि औजार के आधार पर नर्सरी क्यारी का चयन करना चाहिए। अच्छी गुणवत्ता वाले बीज, उचित जल प्रबंधन तथा पौध सुरक्षा उपाय जरूरी हैं। पौधों की आयु पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि इससे स्वस्थ पौधे होते है और आगे चलकर अच्छी फसल देते हैं। यह सदा ध्यान में रखना होगा कि स्वस्थ पौध आसानी से उगाई जा सकती हैं। स्वस्थ पौधों को उगाने की सफलता निरंतर निगरानी एवं उचित प्रबंधन पर मुख्य रूप से निर्भर करती है।

(क्रमशः वैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं प्रधान वैज्ञानिक, एनआरआरआई, कटक, ओडिशा)

इंतजार

डॉ.आशुतोष उपाध्याय

अध्याय-1

अप्रैल का महीना मि. शर्मा के लिए हमेशा कुछ नया सा ही होता है और हो भी क्यों न ऐसी कुछ यादें जो जुड़ी हुई हैं इसके साथ। आज जीवन के आखिरी पड़ाव की ओर बढ़ते हुए भी कुछ यादें ऐसी हैं जो उनके दिल में आज भी वैसी की वैसी हैं। जीवन के उन्हीं दिनों को सहेजते हुए मि.शर्मा हाथ में हथौड़ा लिए अपने नेमप्लेट की कीलें टाइट कर रहे थे। " अभिषेक शर्मा" नाम की प्लेट, उसके नीचे कॉल बेल, गेट से घुसते ही दाहिनी ओर सुन्दर घास का लॉन और किनारे बरामदे में रखा हुए पिंजरा जिसमें चार खरगोश खेल रहे थे। "उसे खरगोश बहुत पसन्द थे" यही सोच रहे थे अभिषेक शर्मा जब उन्हें दाने दे रहे थे। खरगोश के साथ उनका प्यार उसी के बाद बढ़ा था और हो भी क्यों न, सिर्फ वे ही तो थे उनके साथी इस घर में।

67 साल के अभिषेक शर्मा अब भी ऑफिस जाते थे हालाँकि वह रिटायर हो चुके थे लेकिन दो-तीन एक्सटेंशन लेकर और ऑफिस वालों का प्यार पाकर वह उनसे जुड़े हुए थे। आखिर करते भी क्या अकेले इस घर में रहकर। चिन्ता और व्याकुलता ने उन्हें तरह-तरह की बीमारियों से जकड़ रखा था। अभी कल ही तो ब्लड प्रेशर अधिक बताया था डा. डोगरा ने और इन्सुलिन भी दिया था बाकी अल्सर ने तो पहले ही खाने में पाबन्दी लगा रखी थी। फिर भी जैसे-तैसे दिन गुजर रहा था। आज 12 अप्रैल को मि. शर्मा सुबह-सुबह बालकनी में खड़े गार्डन की ओर देख रहे थे। एक लड़की एक लड़के को कुछ समझाती जा रही थी और लड़का चुपचाप उसकी ओर देखते हुए उसकी बातें सुन रहा था। शर्मा जी अपनी यादों में खो गये "देखो तुम्हारे बार-बार यहाँ आने और फोन करने से लोग बातें बनाते हैं तुम्हारा और मेरा नाम जोड़ते हैं। मैं नहीं चाहती कि लोग हमें कुछ बात कहे या हमारे उपर ऊँगलियॉ उठायें" और अभिषेक उसी तरह उसकी ओर देखते हुए उसकी सारी बातें सुन रहे थे और आखिर में बस यही कहा था "मुझे किसी की परवाह नहीं है" चुप होकर निगाह नीचे कर ली थी उसने। शर्मा अब भी वो दिन सोचकर सिहर उठते है कि काश वक्त थम गया होता...।

"बाबूजी अपनी सेहत का ध्यान रखा करो" एक आया कहा करती थी जो कुछ सालों पहले घर के काम करने यहाँ आती थी फिर बेचारी का देहावसान हो गया। मि. शर्मा का तन्हाई से अटूट रिश्ता बन चुका था। याद आती हैं तो सिर्फ उसकी और उससे जुडी हुई यादें । पता नहीं क्यों हमेशा एक उम्मीद सी रहती थी उनके दिल में, एक सच्चा प्यार जो था उनके दिल में।

प्यार, पीपल के बीज के समान होता है। सालों पड़ा रह जाता है लेकिन पुनर्जीवन की क्षमता नहीं खोता है। ठूठे पेड़ पर भी अगर गिर जाये तो नया पौधा बन जाता है। टूटे, गिरे पड़े हुए मकान या पेड़ों पर पीपल उगना प्यार का ही प्रतीक है। प्रेम का पौधा जीवट और खुद्दार होता है जो आसानी से मरता नहीं है। यदि एकबार अंकुर फूट जाये तो धीरे-धीरे वटवृक्ष की तरह फैलने से रुकने का नाम नही लेता है, चाहे जितनी बार शाखाएँ काट दो लेकिन वह फिर से पनपने लगती है।

मि. अभिषेक शर्मा के हृदय में वही विशाल वटवृक्ष है जो उन्हें उनकी तन्हाइयों में भी जिन्दा रखे हुए है परन्तु उन्हें हासिल कुछ भी नहीं है। सिर्फ और सिर्फ एक ही रिश्ता था उनके जीवन का और वो था प्रेम का, परन्तु वो भी सिर्फ कहानी बन कर रह गया। जिसकी तृष्णा अब भी दिल में पड़ी हुई है। कभी-कभी समर्पण और एकाग्र स्नेह के बावजूद कुछ भी हासिल नहीं हो पाता और अपेक्षाओं का गला हर बार बड़ी बेरहमी से रेत दिया जाता है, फिर भी उम्मीदें जिन्दा रहती हैं। हाथ-पैर अपना अपना काम करते रहते हैं लेकिन दिमाग का घोड़ा बे-लगाम इधर-उधर भागता रहता है। मि.शर्मा शायद इसी ऊहापोह में अपने जीवन की नैया में सवार थे।

जीवन ने मि.शर्मा को सब कुछ मिला नहीं तो 'उसका' प्यार जिसकी उन्हें उम्मीद थी। आखिर उसका विश्वास क्यों नहीं जीत पाये ? इतना सब होने पर उसने भी तो कुछ सोचा होगा पर क्या था जो उसे रोकता होगा जब

उसकी बाते सुनने के लिए घण्टों फोन पर बिता दिया करते थे वो। हालांकि ये बातें पुराने समय की हैं और अब इस 67 साल के वृद्ध के लिए अतीत बन गई है जो देखने पर 80 साल से भी अधिक का लगता है। परन्तु जीवन में कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो जीवन जीने का पर्याय बन जाती हैं। मि.शर्मा की जिन्दगी उसी पर चल रही थी।

"पोस्टमैन" दरवाजे पर दस्तक हुई। चिट्ठी और उनके लिए ? ये सोचते हुए दरवाजा खोला तो पोस्टमैन ने एक रंगीन लिफाफा मि.शर्मा को पकड़ाया। लिफाफा खेला तो देखा कि 'नवजीवन' संस्था की तरफ से अनाथ बच्चों ने नये साल की मुबारकबाद भेजी है। यह वही अनाथ बच्चों की संस्था है जिसे मि.शर्मा अपने महीने की आय का हिस्सा उन्हें दान में दिया करते हैं, ये उनके छोटे बच्चों से अनूठे प्यार का ही नतीजा है। दिल खुश हो गया बच्चों का प्यार पाकर। "एक और साल बीत गया" उद्धेलना के साथ एक गहरी सी साँस ली उन्होंने और लिफाफा किनारे सुरक्षित जगह रख दिया।

जिन्दगी जीते हुए आदमी न जाने कितने तरह के अनुभव और संवेदनाओं से गुजरता है कि पता नहीं चल पाता कि कब क्या हो गया। व्यक्ति फिर भी उधेड़बुन में रह जाता है कि शायद यह होना चाहिए या वैसा होना चाहिए। मि. शर्मा को 'चाहिये' शब्द से नफरत सी हो गयी थी। वह लोगो को कैसे समझा सकते थे कि उन्हें क्या चाहिए था जो उन्हें नहीं मिला। आज इतने सालों से उन्होने वह सब कुछ सहेजकर रखा हुआ है जो उन्हें उससे जुड़ी हुई लगती हैं। वह पुरानी कार जो शायद उसे उस समय सबसे अच्छी लगती थी, वह गाड़ी मि.शर्मा ने बाद में खरीद ली थी। एक और चीज जो मि.शर्मा अपने पास रखना नहीं भूलते थे-एक छोटा सा गिफ्ट जो उसने 47 साल पहले जाते हुए दिया था कि "इसे अपने पास रखना ये गुड्लक देता है।" इतना कुछ समेटकर वह वृद्ध 47 साल तक अपने को उसके करीब समझता था, लेकिन शायद वह समझना ही नहीं चाहता था कि वह तो ...।

आज सुबह-सुबह टहलते हुए पड़ोस के बंसल साहब मिले। "और शर्मा जी कहॉ चले गये थे ? पिछले एक हफ्ते से दिखाई नहीं दिये"। "बस थोड़े दिनों के लिए मनाली चला गया था "शर्मा जी पिछले कई सालों से मैं देख रहा हूँ आप हर साल मनाली जाते हैं, क्या रखा है उन पहाडों में?" शर्मा जी मुस्कराये कैसे कहें कि क्या रखा है उन पहाडियों में। वे सुहानी यादें वे लम्हें वही सब तो वहां छोड़कर आये हैं जिन्हें बार-बार समेटने का असफल प्रयास करते रह जाते हैं। ये बंसल या कंसल क्या समझेगें।

इतने सालों की थकान और अफिस की आपाधापी में मि.शर्मा ने अब रिटायरमेन्ट का पूरा मन बना लिया था। सोचा कि अबकी बार तो वह आफिस वालों की एक नहीं सुनेगें, 6-7 सालों से बार-बार उनका का आग्रह मानते चले आ रहे हैं। "पर सर हमारा क्या होगा हमारा भी तो ख्याल कीजिए" मि. गर्ग ने कहा। मि.शर्मा का तीव्र प्रतिरोध देखकर सभी मान गये। एक फेयरवल पार्टी आयोजित की गयी कई जिसमें बहुत सारे मेहमान आये। सब लोग आपस में मस्त थे। "सर आइये मैं आपको इनसे मिलाता हूँ।" मि.गर्ग की आवाज मि.शर्मा के कानों में पड़ी। "ये हैं मि.हितेश खत्री और उनकी वाइफ मिसेज सविता खत्री।" नाम सुनकर शर्मा चौंक गये, देखा तो-"अरे ये तो सविता है–(मेरी) सविता, इतने सालों बाद क्यों ऐसे–क्या–? न जाने कैसे-कैसे प्रश्न और जज्बात उनके दिल में उमड़ पड़े। सविता भी अवाक थी। मि.शर्मा की आँखें छलक उठीं, इतने सालों बाद उन्होंने उसे देखा। चाहते थे कि लिपटकर खूब रोएँ, शिकायत करें लेकिन हालात बदल चुके थे। अब वह किसी की पत्नी थी और उसका अपना एक अलग परिवार था, सामाजिक वर्जनाएँ थीं। प्रेम भी एक न मिटने वाली चीज है कई दशक बीत जाये पर फिर भी यह पुनरुद्धभवन शक्ति नहीं खोता है। "मि. शर्मा आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई" सविता के पति ने अभिषेक शर्मा की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। "मुझे भी" मि. शर्मा ने उत्तर दिया। सविता भी कुछ बोलना चाहती थी पर बोल न सकी।

गर्ग साहब मुझे चलना चाहिये, बोलकर मि.शर्मा अपने आफिस वाले कमरे की ओर बढ़े। इधर सविता ने गर्ग साहब से एक गिलास पानी की माँग की, उन्होने ने वेटर को बुलाया। "नहीं मैं खुद ले लूंगी, कहाँ है?" उन्होने शर्मा के कमरे की ओर इशारा किया, सविता उसी ओर बढ़ गयी।

"अभिषेक—।"

-'ओ सविता कैसी हो ?

"ये तुमने क्या हालत बना रखी है कितने कमजोर और बूढ़े दिख रहे हो," शायद कुछ दया उसके दिल में उत्पन्न हो रही थी।

-'सब वक्त का फेर है'

"देखो आई एम सॉरी कि...

-'अब पुरानी बाते उधेड़ने का कोई औचित्य नहीं (बात काटते हुए शर्मा ने कहा)

सविता ने पूछा "और घर में कौन-कौन है, मेरा मतलब बीबी-बच्चे..."

-'तुम्हारे तिरस्कार के बाद मैने शादी नहीं की।'

"क्या....?"

सुनकर लगा कि जैसे पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। वह स्तब्ध, चुपचाप आँखे फाड़े अभिषेक शर्मा की ओर देख रही थी। अभिषेक शर्मा की आंखों में इन्तजार का लम्बा वक्त उसे साफ-साफ देख रहा था। थोडी देर तक कमरे में सन्नाटा पसर गया। मि.शर्मा अपने कमरे से बाहर आ गये। सविता अब भी वहाँ बुत सी खड़ी थी। तरह-तरह के प्रश्न और पश्चाताप ने उसे बुरी तरह जकड़ लिया। खुद से नजर नहीं मिला पा रही थी वह। मेरे लिए इतने साल उसने ऐसे ही गुजार दिया और मैं स्वार्थी बन अपना परिवार बसा रही थी ? उसने मुझसे कितनी उम्मीदें लगा रखी होंगी मैं उसे थोड़ी सी भी खुशी ना दे पायी ? कैसे काटे होंगे उसने इतने साल अकेले और अब कौन होगा उसकी देख भाल करने वाला ? क्यों किया मैने ये सब। कैसे मेरे लिए आसान हो गया था उस वक्त कहना कि "दूर हो जाओ मुझे मैं तुम्हारी शक्ल भी देखना नहीं चाहती"। क्यो न समझ पायी मैं उसे...क्यो? सविता अब बाहर आ चुकी थी। मि. अभिषेक शर्मा अपने ऑफिस से विदाई लेकर जा रहे थे सिर्फ एक घड़ी के सहारे। सविता फिर से एक बार अभिषेक से मिलना चाह रही थी। सविता पीछे से अभिषेक को देख रही थी। अभिषेक शर्मा के एक-एक कदम दूर होने के साथ-साथ सविता के आँसू भी एक-एक कर गिरते जा रहे थे। वह चाह रही थी कि एक बार अभिषेक पलटकर उसकी ओर देखे वर वह था कि बढ़े जा रहा था। अब पलटता भी क्यों बहुत देर जो हो चुकी थी और देर भी पूरे 47 साल।

अध्याय-2

"जिन्दगी के महत्वपूर्ण पड़ाव पार करने के पश्चात भी ना जाने क्यो यह लगता है कि जीना तो अभी शुरू ही नहीं किया हो। बस समय बदलता गया परिस्थितियाँ परिवर्तित होती गईं लेकिन भी मन का खालीपन नहीं गया। कुछ पाने की चाहत और एक विशेष प्रयोजन की टीस फिर भी व्याप्त रही। पर क्या करें कभी-कभी व्यक्ति विशेष कहीं न कहीं लाचार जरूर होता है। सारी चीजें अपने हाथ में नहीं होती है।"

मि.अभिषेक शर्मा डायरी लिखते-लिखते कब सो गये उन्हे पता ही न चला। सुबह उठकर देखा तो खिड़की से सूरज की लाल किरणों से मिलकर पूर्व दिशा की हवा उनके डायरी के पन्नो को उड़ा रही थी। अपनी पुरानी छड़ी के सहारे चलकर अभिषेक बालकनी में आ गये और एक टक लाल सूरज को देखने लगे मानों वो पूरा ही उसे लील लेना चाहते हों। ऐसा कर वे शायद अपने किसी दबे कुचले स्वभाव को उबारने की कोशिश करते हैं।

"साहब मुँह धो लो, चाय टेवल पर रख दी है" कमला की आवाज कान में गूँजी जो पिछले कई सालों से अभिषेक शर्मा के घर काम करती है। अनेक तरह की बीमारियों से ग्रस्त 75 साल के शर्मा जी को किसी के सहारे की जरूरत तो थी ना आखिर शादी जो कभी नहीं की उन्होंने। जीवन के सफर में अकेले होने के बावजूद मि.शर्मा एक ऐसे एहसास के साथ जी रहे थे। उन्होंने कभी जीवन से हार महसूस ही नहीं की। व्यक्ति कभी कितना की अकेला क्यों ना हो परन्तु कभी-कभी जिन्दगी के कुछ ऐसे एहसास होते हैं जो उसे निर्भय बना देते हैं। मि.शर्मा जिन्दगी में कभी भी परिवर्तित नहीं हुए, हाँ एक सशक्त दंभ का आश्रय जरुर बने रहे। प्यार का एहसास उन्हें जिन्दगी भर रहा। वो प्यार जो उन्हें कभी मिला ही नहीं। परन्तु एक आन्तरिक सन्तुष्टि का एहसास हमेशा किया। उस एहसास की वो अपनी अच्छाई समझते थे, अपनी ईमानदारी समझते थे, पर वक्त का फेर कुछ ऐसा था कि आज 75 साल से अधिक के शर्मा जिन्दगी के सफर में अकेले हैं। और 'सविता' जी उनके जीवन की एक मात्र आकर्षण थी। पर मि.शर्मा का प्रेम अपनी जड़े मजबूत कर चुका था और शायद वर्ष दर वर्ष ये और भी जीवट होता जा रहा था। ठीक ही कहा गया है-प्यार हासिल करना नहीं, देने का नाम है।

उम्र के इस पड़ाव पर प्रेम की अनोखी सी चाहत शायद प्रासंगिक न हो परन्तु सच यही था। भला उम्र के साथ परछाँई क्या खत्म होती जाती है? हृदय पर वह छाप क्या मिट सकती है जब 47 साल पहले उसने ऐसा मुँह फेरा कि पलटकर नहीं देखा। व्यावहारिक रूप से तो अध्याय वहीं खत्म हो जाना था परन्तु जज्बात कभी भी व्यावहारिकता की परिपाटी पर नहीं चलते हैं। भावनाओं का समुद्र न जाने कितनी बार मि.शर्मा को अपनी ज्वारभाटाओं से तार-तार कर चुका है परन्तु हर बार ये उन्हे चीटी के प्यास बुझाने के बराबर जल सा प्रतीत होता है।

दर्द का एहसास आखिर कब तक झेल सकते थे मि.अभिषेक शर्मा।

कल्पना से परे अथाह प्रेम का संवहन कभी-कभी मुश्किल होता है। परिस्थितियाँ हमेशा ही अनुकूल नहीं होती हैं। परन्तु हृदय में प्रेम संचार का गुण हमेशा ही विद्यमान होता है। माध्यम अलग हो सकते हैं लेकिन दिशा सदैव निर्धारित होती है। अभिषेक शर्मा के प्रेम में विराम अवश्य था परन्तु दिशा सदैव से

एक ही थी। उम्र के इस पड़ाव में भी अभिषेक उन सब बातों को सोचकर सिहर उठते हैं जो सालों पहले घटित हुई थी। अब कितना सुखद लगता है वे बातें सोचकर। उस वक्त अभिषेक ने यह सोचा भी न था कि ये सब कभी उनके जीने के माध्यम बन जायेगें।

आज सुबह से ही अभिषेक कुछ अलग सा महसूस कर रहे थे। सुबह सूरज की किरणों की स्वीकार करने के बाद सोचा कि आज प्रार्थना करते है। "साहब को आज तक पूजा-पाठ करते नहीं देखा पर आज क्या हो गया" कमला सोच रही थी। चाय लेकर गयी तो साहब ध्यान में थे, सो वापस चली आयी। थोड़ी देर बाद अभिषेक बालकनी में आये फिर अन्दर चले गये। "साहब कुछ बोलते क्यों नहीं पहले तो ऐसा नहीं होता था" अभिषेक आराम कुर्सी पर बैठकर झूलने लगे। साँसे भारी होने लगी मन बेचैन होने लगा और आवाज तो जैसे आ ही ना रही हो। थोड़ी देर बाद एक काँपती हुई आवाज कौंधी हे भगवान..।" और मि.अभिषेक शर्मा की आवाज हमेशा के लिए बन्द हो गयी। कमला भागकर आयी तो देखा कि अभिषेक शर्मा निर्जीव पड़े थे। कमला रोने लगी। अभिषेक की दाई मुट्ठी बन्द थी, कमला ने हाथ खोला तो देखा कि एक छोटी सी प्रतिमा थी जिसके पीछे लिखा था- "अभिषेक इसे सदा अपने पास रखना यह गुडलक देता है- सविता"।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रेमास लाइफ साइंसेज,
बैंगलुरू, कर्नाटक